98	नीरं वारि जलं दकं कमुदकं पानीयमम्भः कुशं कि	17
99	तायं जीवनजीवनीयसिललाणीस्यम्बु वाः शम्बर्म्।	
1	त्तीरं पुष्कर्मेघपुष्पकमलान्यापः पयःपायसी विकास	er
2	कीलालं भुवनं वनं वनर्सो पादोनिवासो जमृतम् ॥ १०६६ ॥	
3	कुलोनसं कबन्धं च प्राणादं सर्वतामुखम् विकासकार्व प्राचान	
4	म्रस्थाघास्थागमस्ताघमगाघं चातलस्पृशि ॥ १०७० ॥	
5	निमं गभीरं गम्भीर-	
6	मुत्तानं तदिलदाणम्।	25
7	म्रच्हं प्रसन्ने स्वाहित स्वाह	
8	॥ अनच्छं स्यादाविलं कलुषं च तद् ॥ १०७१ ॥	
9	म्रवश्यायस्तु तुन्हिनं प्रालेयं मिन्हिका व्हिमम् इतिहा उति	27
10	स्याद्रीक्रार्स्तुषार्श्चमाध्यानिका निकीष्	28
11	व्हिमानी तु मक्द्विमम्॥ १०७२॥ नि	29
12	पारावारः सागरा ज्वार्पारा ज्वूपाराद्ध्यर्णवा वीचिमालो ।	
13	यादःस्रोतोवार्नदीशः सर्स्वान्सिन्ध्दन्वती मितदुः समुद्रः ॥ १०७	3111
14	म्राकरें। मकराद्रलाद्रिधधराशयाः के जान	
15	द्वीपात्तरा म्रसंख्यास्ते सत्तैवेति तु लै। किकाः ॥ १०७४ ॥	33
16	लवणनीर्ध्याव्यस्रिनुस्वाड्वार्यः। शिक्षाक गोणकणण्डले जिन	34
	8-3. Wasser (34 W.). — 4. Ueberaus tief (5 W.). — 5. T	35
98-3. Wasser (34 W.). — 4. Ueberaus tief (5 W.). — 5. Tief (3 W.). — 6. Flach, untief. — 7. Klar (2 W.). — 8. Trübe (3 W.). —		
9 10. Frost (7 W.). — 11. Strenger Frost. — 12 14. Meer (21 W.).—		
15. 16 Die Meere mit den Inseln darin sind ohne Zahl; jedoch		
nimmt man nach altem Brauch deren sieben an: das salzige Meer, das Milchmeer, das Meer von geronnener Milch, das Buttermeer, das		
das minenineer, das meer von geronnener minen, das Duttermeer, das		

Weinmeer, das Zuckermeer und das Süsswassermeer.